पड़ोस–धर्म ही सर्वोतम धर्म है

डॉ0 उत्तरा यादव,
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
महिला पी0जी0 कॉलेज, अमीनाबाद, लखनऊ

सभी धर्म पड़ोसी भावना से ओतप्रोत हैं। सभी धर्म सभी लोगों के प्रति सहिष्णुता और सहानुभूति रखने का संदेश देते हैं। ईसा मसीह ने एक दूसरे से, विशेष रूप से पड़ोसी से, प्रेमपूर्वक और मित्रतापूर्वक रहते हुए सेवा करने की सीख दी है। सनातन धर्म में पड़ोस भाव को सृष्टि व्यवस्था का मुख्य आधार माना गया है। पड़ोस की भावना मन को मन से व हृदय से हृदय को जोड़ती है। परिवार व समाज इसी बुनियाद पर खड़े हैं। परिवार में समरसता और सभ्य समाज इसी के परिणाम हैं। जहाँ पर प्रेम और पड़ोस भाव होता है वहाँ सुख–शान्ति व प्रसन्नता छलकती है। सभी मिल–जुलकर पड़ोस की भावना से प्रेमपूर्वक रहें, यह उपनिषद् की दिव्य वाणी है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से दूर एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उसे जीवन–निर्वाह के लिए समाज के सौहाद्रपूर्ण वातावरण की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए समाज में रहने का न्यूनतम मापदण्ड एक ही है– पड़ोसी के साथ भ्रातृत्व भाव का होना। एकाकीपन की कठोर यातना से बचने के लिए आपस में प्रेम का भाव विकसित करना आवश्यक है। इसके बिना कोई भी जीवन को टूटने और बिखरने से बचा नहीं सकता। यदि मन में श्रेष्ठ विचार हो और हृदय में उदात्त भावना हो तो आपस में उठने वाली सभी विसंगतियों और समस्याओं से सरलतापूर्वक मुक्ति पायी जा सकती है। हमें हाथ की पाँच उंगलियों की भाँति एकजुट होकर रहना चाहिए। हम सभी को विश्व मानव के कल्याण के लिए एकजुट होकर और प्रतिबद्ध होना चाहिए। पड़ोसी का सिद्धान्त है– स्वयं के अंदर दबी हुई मानवता को जगाना। जैसे सूरज की उष्णता, चन्द्रमा की शीतलता, जल की तरलता और दीपक का प्रकाश ही सच्ची विशेषता है, उसी प्रकार मनुष्य की एक बड़ी विशेषता पड़ोसी भाव है।

"Love they Neighbour" अर्थात् अपने पड़ोसी से प्रेम करें।

— Jesus Christ

''दुनिया में सबसे ज्यादा सुखी/खुशनसीब वो है जिसका पड़ोस और पड़ोसी अच्छा है।''

"In a neighbourhood, as in life, a clean bandage is much, much better than a raw or festering wound." — Edward Koach

पड़ोस अथवा पड़ोसी कभी भी बदला नहीं जा सकता है। अतः दोनों एवं सम्पूर्ण वातावरण के सुख के लिए आपसी सम्बन्ध अच्छा होना ही चाहिए। वह व्यक्ति सर्वाधिक सुखी होता है जिसके पडोसी अच्छे होते है। अच्छे पड़ोसी परिवार से कम सन्निकट नही होते है आफत या विपत्तिकाल में परिवार का कोई सदस्य किन्ही कारणों से दूर होने के नाते विलम्ब से पहुँच सकता है मगर हमारे पड़ोसी मदद के लिए तत्काल पॅहुचते है, बशर्ते हमारे और पड़ोसियों के बीच मधुर सम्बंध हो।

पड़ोसियों में मधुर सम्बंध तभी बन पाते है जबकि उनमें परस्पर विश्वास, भरोसा सद्भाव, निश्छल एवं निष्कपट तथा स्वार्थ रहित प्रेम भाव हो और यह सब तभी संभव होता है जबकि एक

पड़ोसी दूसरे के सुख–दुख में तत्परतापूर्वक शामिल हो। अच्छे व्यक्ति परिवार एवं पड़ोसी से ही अच्छा समाज बनता है। अच्छे पड़ोसी भी हमारे पारिवारिक सदस्य जैसे होते है। वह हमारे पहरेदार भी हो सकते है और मददगार भी।

गांवों कस्बों और मंजरों में पड़ोसी कई पीढ़ियों से एक साथ रह रहे होते हैं जिसके चलते उनमें यदा–कदा लड़ाई–झगड़ा संभव है, मगर पारिवारिक आयोजनों संस्कार–समारोहों व आपसी मनमुटाव के बावजूद उल्लासपूर्वक शामिल होते है। साथ–साथ रोते गाते, नाचते–हंसते हैं। उनके रिश्तेदार भी परस्पर बंटें नहीं होते हैं। अब भी किसी परिवार का दामाद उस गॉव का दामाद होता है। गॉव पड़ोसी एक–दूसरे के चाल–स्वभाव आचरण अच्छाईयों–बुराईयों से भली–भॉति परिचित होतें हैं। वे परस्पर एक दूसरे की क्षमताओं से वाकिफ होतें हैं। उनके लिये मान सम्मान की बात एक परिवार की न होकर पूरे गॉव की होती है।

इसके विपरीत शहरों के पड़ोसी अलग–अलग संस्कारों, रीति–रिवाजों, अलग–अलग क्षेत्र, भाषा, समुदाय एवं परम्पराओं वाले होते हैं, इसलिये उनमें अपनत्व कायम होने में समय लगता है। पारस्परिक प्रेम और विश्वास जागृत होने में भी समय लगता है। एक दूसरे का भरोसा जीतने में भी समय लगता है। इस मामले में आपका कार्य एवं व्यवहार ही सहायक साबित होता है।

चूंकि शहरी जीवन अपेक्षाकृत अधिक भौतिकवादी है, इस शहरी जीवन में गतिशीलता अधिक है, भाग–दौड़ अधिक है। एक दूसरे के आगे बढ़ने की होड़ अधिक है। सुख–सुविधा के साधन जुटाने की लालसा अधिक है। इसके लिये व्यक्ति नैतिकता एवं मर्यादाओं की सीमा लांघनें से भी बाज नहीं आता, इसलिये वह प्रायः आत्म केन्द्रित अधिक है। इसीलिये पारस्परिक स्वभाव एवं विश्वास का संकट अधिक है। इन्हीं कारणों से तमाम तरह के अपराधों के पनपने की समस्या सामने आ रही है।

हम जहां रहते हैं, उसके आसपास के अनेक घरों में कतिपय लोग रहते हैं। अर्थात् हम सब एक–दूसरे के पड़ोसी–धर्म भी है। उस धर्म के अनुसार हमें यह जानकारी करनी चाहिए कि इन पड़ोसियों का जीवन–यापन कैसे चलता है? उनकी कठिनाइयां, दुःख क्या हैं? हम उनकी सहायता में तत्पर रहें, यह पड़ोसी का धर्म है। पड़ोस में कोई अस्वस्थ हुआ, तो अपने भाग्य से हुआ, चाहे जिये चाहे मरे, ऐसा सोच कर उसकी अनसुनी करना पड़ोसी का धर्म नहीं है। इसमें तो मनुष्यता भी नहीं है, पड़ोस–धर्म तो दूर की बात रहीं। अतः पड़ोस–धर्म का पालन करने हेतु घर–घर में जाना, सबसे मिलना, बोलना, सबसे अत्यन्त स्नेह और आत्मीयता के सम्बन्ध रखने का प्रयास करना और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि सबके हृदय में हमारे बारे में ऐसी धारणा बने कि ''यह व्यक्ति विश्वास करने योग्य है, इसमें अपने प्रति निष्कपट, निःस्वार्थ प्रेम है, यह अपना सच्चा मित्र है, अपने को कोई कष्ट नहीं होने देगा, नित्य अपना साथ देगा और सहायता के लिए दौड़ा आएगा।'' सबके हृदय में हमारे प्रति विश्वास हो। इस विश्वास के बल पर हम सब पड़ोसी मानो एक बड़ा परिवार बने हैं, ऐसी जीवन की रचना हो, ऐसा हम प्रयास करें। इस प्रकार जब हम स्नेह, आत्मीयता और विश्वास का वायुमण्डल सभी पड़ोसियों में उत्पन्न कर सकेंगे, तब उन्हीं में से अपने संघ–कार्य के लिए स्वयंसेवक भी प्राप्त कर सकेंगे।

कालोनियों में पड़ोस धर्म का घटता प्रभाव पाश्चात्य सभ्यता का असर, बदलती लाइफ स्टाइल, धन की हवस का नतीजा माना जा रहा है। आदमी चल नहीं रहा है। दौड़–धूप कर संसाधनों को जुटाने में जुट जा रहा है। फिर एक परम्परा से चल गई है एकल परिवार की। केवल अपने और सिर्फ बीवी–बच्चे की सोचना।

लोप हो रहा संस्कार

समाजशास्त्री डॉ0 मोहन का कहना है कि पड़ोस की अनदेखी की प्रवृत्ति ज्यादातर नगरीय इलाकों में देखने को मिलती है। नगरीय जीवन व्यस्तता वाला होता है। किसी को दूसरे के बारे में जानकारी लेने की फुर्सत नहीं रहती। फिर संस्कार भी लोप होता जा रहा है। पहले उत्साह के साथ पड़ोसी की खुशी या गम में लोग बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी करते थे। अब केवल औपचारिकता पूरी की जाती हैं।

मदर टेरेसा सदैव मानव सेवा में लगी रहती थीं। दूसरों के लिए अपना स्नेह, सहयोग और संवेदना उनकी रग–रग में बसी हुई थी। जहां भी पीड़ित मानवता की पुकार होती वे दौड़ी चली जातीं। एक बार मदर टेरेसा कोलकाता की निर्धन बस्तियों में गईं। वहां के लोगों के पास दो वक्त की रोटी नहीं थी, तन ढकने को पर्याप्त वस्त्र नहीं थे, बच्चे भूख से मर रहे थे। मदर टेरेसा ने तत्काल अपना मानव धर्म निभाया। उन्होंने यथाशक्ति भोजन, वस्त्र वहां के लोगों को उपलब्ध कराए। कुछ दिनों के लिए मदर ने वहीं अपना घर बना लिया ताकि उन लोगों के निकट रहकर उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं को जान सके। वहाँ रहते हुए मदर को एक दिन किसी ने बताया कि उनके पड़ोस में रह रहा एक हिंदू परिवार सात–आठ दिनो से भूखा है। यह सुनते ही मदर थोड़े से चावल लेकर वहां पहुंचीं। हिंदू परिवार की महिला ने मदर से चावल लिए और चावल को दो बराबर हिस्सों में बांटकर एक हिस्सा लेकर बाहर चली गई। जब वह वापस लौटी तो मदर की जिज्ञासा भरी दृष्टि को भांपकर बोली, ''मदर! हमारे पड़ोस में जो मुस्लिम परिवार रहता है, वह भी कई दिनों से भूखा है, इसलिए मैने आधे चावल उन्हें दे दिए।'' उसकी बात सुनकर मदर भावविह्वल हो गईं। अपने इस अनुभव के विषय में उन्होंने कहा कि उस महिला ने थोड़े से चावल को भी अपने भूखे पड़ोसी के साथ बांटकर ईश्वर का असीम प्रेम दूसरे के साथ बाँटा है। यह असली मानव एवं पड़ोसी धर्म है।

पड़ोसी क्षेत्रीय सांस्कृतिक संगठन

दुनिया के पड़ोसी देशों में आपसी विकास एवं अन्तर सांस्कृतिक संचार के क्षेत्र में क्षेत्रीय संगठन क्रियाशील रहते हैं। उनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

आसियान (ASEAN)

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन है। इस संगठन की स्थापना 1967 में की गई थी। इस संगठन की स्थापना का उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशिया में सभी सदस्य पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को तेज करना है। यह संगठन सदस्य राष्ट्रों के मध्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में सहयोग के लिए प्रोत्साहन देता है और इस प्रकार अन्तर सांस्कृतिक संचार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है।

सार्क (SAARC)

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) सार्क का गठन सदस्य देशों के शिखस सम्मेलन में 1985 में किया गया। इसके संस्थापक सदस्यों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और मालदीप आदि सात देश हैं। इस संस्था के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

- ❖ दक्षिण एशियाई देशों के लोगों के कल्याण को प्रोत्साहन देना तथा उनके जीवन स्तर में सुधार करना।
- ❖ आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, तथा सांस्कृतिक सहयोग की गति को तेज करना।

- सामूहिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देना तथा उसे मजबूत करना।
- पारस्परिक विश्वास, समझदारी तथा एक दूसरे की समस्याओं को समझने एवं समाधन की प्रक्रिया में योगदान करना।
- आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों में पारस्परिक सहायता को प्रोत्साहित करना।
- अन्य विकासशील देशों के साथ–सहयोग पर बल देना।
- अन्तर्राष्ट्रीय मचों पर अपने पारस्पारिक सहयोग को मजबूत करना।
- अन्य क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना।

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)

द्वितीय विश्वयुद्ध में हुई तबाही के पश्चात् सभी देशों ने मिलकर अपने विभाग के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के नाम से (24 अक्टूबर 1948) को अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की गई। वर्तमान में विश्व के लगभग सभी देश इसके सदस्य हैं।

इन संगठनों के अतिरिक्त अरब लीग, अफ्रीकी एकता संगठन, यूरोपीय समुदाय, एशिया प्रशान्त आर्थिक सहयोग, राष्ट्रमण्डल आदि संगठन अन्तर सांस्कृतिक संचार में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

मनुष्य प्रायः अपनी सुख समृद्धि की कामना रखता है। भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रन्थों में हमेशा इसी बात पर बल दिया गया है कि किसी को कष्ट न दो, दूसरे के कष्ट दूर करने के लिए हमेशा तन, मन, धन से सम्बद्ध रहना चाहिए तथा सदैव दूसरों विशेष रूप से पड़ोसी की उन्नति में सहायक होना चाहिए। भारतीय संस्कृति का यही उपदेश रहा है कि मनुष्य को उन सुखों की उपेक्षा करनी चाहिए जिनकी प्राप्ति के लिए दूसरे का शोषण करना पड़े। भारतीय संस्कृति के उन्नायकों की यह भावना रही है कि अपना सर्वस्व त्याग करके भी दूसरों को सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए। जो कुछ सत्य, शिव एवं सुन्दर हो यह सबके लिए हो।

भारतीय संस्कृति उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही चैतन्यता और चिन्तन को प्रस्फुटित कर सकी है। इन विशिष्ट गुणों से ही यह संस्कृति आज भी विश्व में विद्यमान है, श्रेष्ठ है, जबकि अनेक संस्कृतियाँ विलुप्त हो गयी। भारतीय मानस अपनी संस्कृति की विशिष्टताओं से, अपनी अमर सांस्कृतिक निधि के सदुपयोग से राष्ट्रीय जीवन का उत्थान कर सके और विश्व को अपनी सांस्कृतिक धरोहर दे सके।

अतः अन्त में कहा जा सकता है कि पड़ोसी धर्म ही सर्वोतम धर्म है इसको हर हालत में निभाया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. ईशदूत ईसा– स्वामी विवेकानंद, अनुवादक श्री हरिवल्लभ जोशी, प्रकाशक
2. स्वामी ब्रह्मानन्द, अध्यक्ष रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, नागपुर, 2011
3. The Holy Bible, Published by The Bible Society of India, 206 Mahatma Gandhi Road, Bangalore-360001
4. दैनिक जागरण, 21 जून 2014, आषाढ़ कृष्ण 9, वि0 2071
5. हम अच्छे क्यों बनें, लेख– राकेश कुमार मित्तल, आई0ए0एस0